पाठ -4

DJ6VDL

वैदिक काल

(1500 ई0पू0 से 600 ई0पू0)

सिन्धु घाटी के नगर जब नष्ट हो गए तो उन नगरों के घर ढहकर मिट्टी के नीचे दब चुके थे। इन स्थानों पर नए लोगों ने रहना आरम्भ किया। ये लोग गाँवों में रहते थे। उन गाँवों में किसान खेती करते थे, कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाते थे और दूसरे कारीगर ताँबे और काँसे की वस्तुएँ बनाते थे। धीरे-धीरे इनके आस-पास कुछ और लोग आकर बसे जो अपने आप को "आर्य" कहते थे। जिसका अर्थ "श्रेष्ठ" या "उत्तम" था।

आर्य सम्भवतः काला सागर और कैस्पियन सागर के पास के मैदानों में रहते थे। वहाँ से वे फैलते गए और नयी-नयी जगह बसते गए। आर्य गाय, बैल, घोड़ा, भेड़, बकरी आदि पशुओं को पालते थे। उनके पास हजारों की संख्या में पालतू पशु होते थे।

चारे-पानी की खोज में

आर्यों के पास पालतू जानवरों की सख्ंया अधिक होने के कारण वे जहाँ चारा-पानी मिल जाता वहीं बस जाते थे। जब चारा-पानी कम पड़ने लगता था तो कुछ लोग जानवरों को लेकर आगे निकल जाते थे। जहाँ चारा मिलता आर्य वहाँ बस जाते थे। इस प्रकार आर्य कई समूहों में यहाँ आए और अपने पशुओं के साथ नई-नई जगहों पर बसते गए। वे एक अनोखा जानवर, तेज दौड़ने वाला घोड़ा भी लाए थे। आर्य पशुओं से सम्बन्धित व्यवसाय जैसे- ऊन कातना व बुनना, घोड़े से रथ-जोतना तथा लकड़ी की वस्तुएँ बनाना आदि कार्य करते थे। लगभग 1200 ईसा पूर्व से 1000 ईसा पूर्व तक आर्य-सिन्धु, सतलज, व्यास और सरस्वती नदियों के किनारे आ बसे।

चर्चा कीजिए

क्या उपर्युक्त क्षेत्रों में पहले से रह रहे लोगों ने आर्यों का विरोध किया होगा ? कैसे ?

आर्यों का भारत में आगमन एवं फैलाव

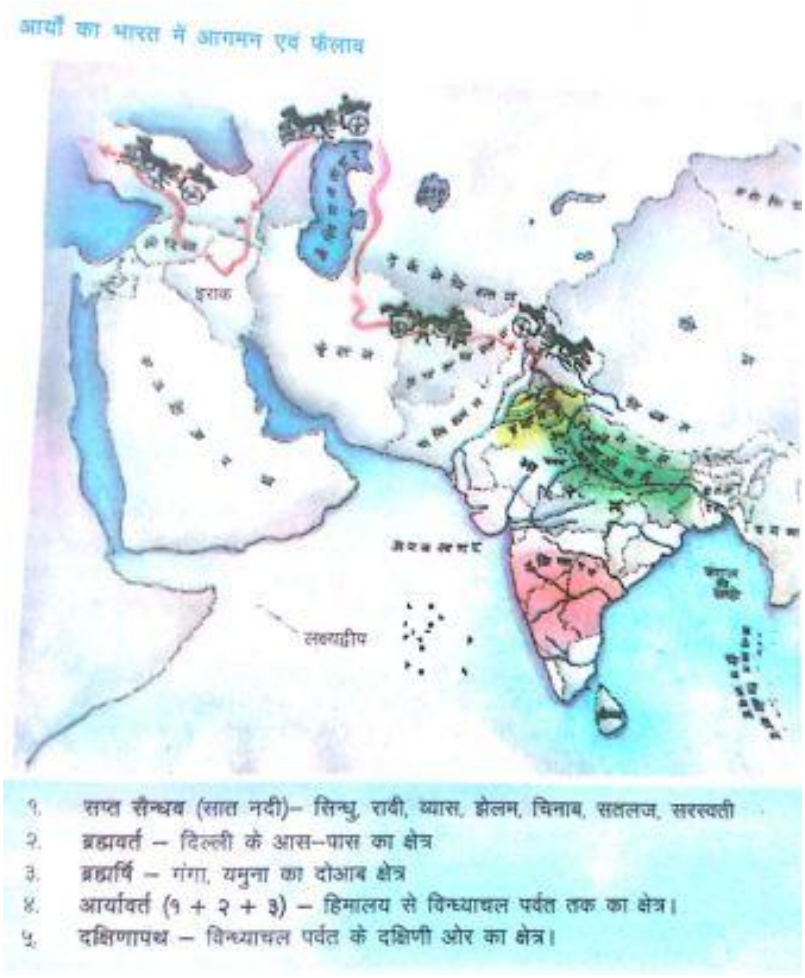

आर्यों की भाषा

यह कहना कठिन है कि सारे आर्य लोग एक ही नस्ल के थे। वे इण्डो-यूरोपियन परिवार की भाषा संस्कृत बोलते थे। अब भी यह अपने बदले हुए रूपों में यूरोप, ईरान व भारत में बोली जाती है। यह तथ्य इन भाषाओं के बोलने के ढंग की समानताओं पर आधारित है। बोल कर देखिए-

संस्कृत फारसी लातिन अंग्रेजी
पितृ पिदर पाटर फादर
मातृ मादर माटर मदर

आइये कुछ करें

(क)खाली जगह भरिए:-

आर्य सम्भवतः ..... में रहते थे। जहां..... मिल जाता वहीं बस जाते। वे एक ..... लाए थे। आर्य पशुओं से ..... वस्तुएँ बनाना आदि कार्य करते थे।

पशुपालक आर्यों की बस्ती

आर्य लोग जहाँ बसते थे, वहाँ अपने कबीले के मुखिया के नाम से वंश चलाते थे। प्रमुख वंश थे- पुरु और अनु। आर्यों ने अपनी बस्ती में घास-फूस, लकड़ी और मिट्टी के बने घरों के

अलावा कई गौशालायें बना लीं। आर्य लोग गाँव में रहने वाले किसानों को पणि नाम से पुकारते थे। आर्यों और पणियों के बीच अक्सर लड़ाई हुआ करती थी। आर्य उनको "दस्यु" कहा करते थे। आर्य एवं पणि लोग रंग-रूप, बनावट, काम-धंधे, बोलचाल, रहन-सहन में एक-दूसरे से भिन्न थे। आर्यों के जानवरों की संख्या कम होने पर उनकी शंका पणियों द्वारा इनको चुरा लेने पर होती थी। इस कारण उनमें आपसी संघर्ष होता था। धीरे-धीरे आर्यों और पणियों के बीच आपस में वस्तुओं का लेन-देन शुरू हो गया। पणि लोग गेहूँ उगाते थे। ये आर्यों को गेहूँ देकर उनसे घी-दूध ले जाते थे।

धीरे-धीरे एक दूसरे के रीति-रिवाजों का मेल-मिलाप शुरू होने लगा। आर्य जौ भी उगाने लगे थे। आर्यों का मुख्य भोजन, दूध और दूध से बनी चीजें, जौ की रोटी, मक्खन, फल, सब्जी, छाछ और शहद था।

वाक्य पूरा कीजिए

आर्य लोग जहाँ ..... चलाते थे। आर्य गाँव में रहने वाले ..... पुकारते थे। आर्यों का मुख्य भोजन .... था।

चर्चा कीजिए

अलग रीति-रिवाज वालों के साथ आपका व्यवहार कैसा होना चाहिए ?

आर्यों के जन

वैदिक काल में कई परिवार मिलकर गोत्र का निर्माण करते हैं और कई गोत्र विश का निर्माण करते थे। इसी प्रकार कई विश मिलकर जन बनाते थे हमें कई जनों के नाम जैसे पुरुजन की जानकारी वैदिक साहित्य से मिलते है। किसी समस्या को सुलझाने के लिए एक सभा होती थी। सभा में सत्तर-अस्सी लोग बैठते थे, उनमें से पाँच-छः लोग विशेष आसन पर बैठते थे। आसन पर बैठने वाले प्रमुख लोग राजन्य होते थे। वे या तो अपनी उम्र, अनुभव, शक्ति, योगदान के कारण प्रमुख थे अथवा अन्य लोगों की अपेक्षा उनके पास अधिक गाय, घोड़े व रथ होते थे। प्रमुख लोगों के अलावा बाकी लोग 'विश' कहलाते थे। सभा में समस्या रखी जाती थी। सभी लोग मिलकर समस्या को सुलझाते थे।

सूझ-बूझ

अपने गाँव की समस्या को सुलझाने के लिए आप क्या करेंगे ?

हमारे समाज में किन लोगों की सलाह को ज्यादा महत्व दिया जाता है ? क्यों ?

युद्ध और राजा

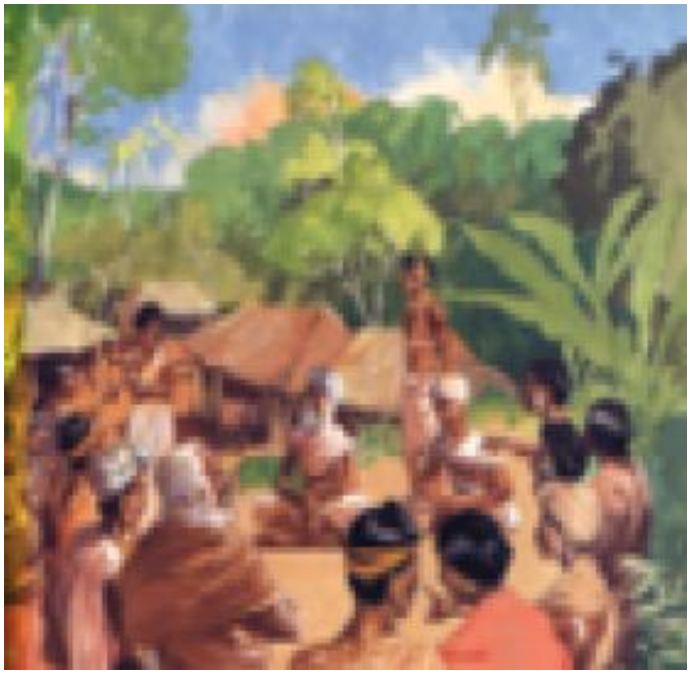

सभा

आर्यों के समय से गाय को महत्व दिया जाने लगा था। जन के लोग हमला करके एक दूसरे की गायों को भगा ले जाते थे। यही आर्य जनों के बीच होने वाले युद्धों का मुख्य कारण था। पशु-पालक आर्यों के पास अलग से सेना नहीं थी। युद्ध के समय जन के सभी लोग मिलकर लड़ने जाते थे। युद्ध की अगुवाई करने के लिए जन का राजा चुना जाता था। जन को युद्ध में विजय दिलाना राजा का काम था। इसके साथ-साथ वह कबीले में रहने वालों और उनकी सम्पत्ति की भी सुरक्षा करता था। उसका पद वंशानुगत नहीं था।

यज्ञ और वेद

आर्य लोग प्रारम्भ में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए देवताओं को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपाठ करते थे। बाद में यज्ञ करने लगे। यज्ञ का कार्य पुरोहित करवाता था। यज्ञ सामूहिक हुआ करते थे जिसमें पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की भी सहभागिता होती थी। यज्ञ में कार्य की सफलता के लिए भेंट व चढ़ावे के साथ-साथ देवताओं की प्रशंसा में वेद के मंत्र गाए जाते थे।

इन्द्र आर्यों के सबसे प्रिय देवता थे, जो उन्हें युद्ध में विजय दिलाते थे।

यज्ञ के समय ब्राह्मण वेद-मंत्रों का सस्वर पाठ करते हुए आग में घी डालते जाते थे। ये मंत्र संस्कृत भाषा में थे जिन्हें मंत्र या ऋचा कहा जाता है। ये मंत्र "ऋग्वेद" में मिलते हैं। बहुत समय तक ये मन्त्र लिखे नहीं गए। इन्हें बोल-बोलकर याद रखा जाता था और दूसरों को सिखाया जाता था। बाद में इन्हें लिख दिया गया। आज हम ऋग्वेद के मंत्रों को पढ़कर आर्यों के जीवन की कई बातों को जान सकते हैं। वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद बाद में रचे गए। इन वेदों में यज्ञों और मंत्रों का

उल्लेख है। वेदों में ईश्वर से प्रार्थना भी किए जाने का वर्णन है। ईश्वर से प्रार्थना की जाती थी कि अच्छी वर्षा हो तथा अच्छी धूप खिले जिससे फसल अच्छी हो।

ऋग्वेद में ही प्रसिद्ध गायत्री मंत्र है जो आज भी हिन्दू यज्ञों में उच्चारण किया जाता है।

ी"हे विश्व निर्माता, तुम्हारे पापनाशक ज्योतिपुंज से हमारा उद्धार हो। तुम्हारे आलोक स्पर्श से हमारी बुद्धि सही दिशा में संचालित होती रहे।"

राजा का चुनाव

जन की एक सभा होती थी। सभा में सब लोग चुने गये राजा को बधाई देते थे। जन के लोग नये राजा के बनने से खुश होते थे। वे अपने घर से उसके लिए कुछ भेंट व चढ़ावा लाते थे। कोई एक घड़ा घी, कोई दो गायें तथा कुछ सोने के जेवर देते थे। इस तरह राजा के पास काफी भेंट जमा हो जाती थी। ऐसी भेंट या चढ़ावे को आर्य लोग बलि कहते थे। इस भेंट को राजा कबीले के सभी लोगों में उनकी जरूरत के अनुसार बाँट देता था। इससे कबीले को आपस में जोड़ने में मदद मिलती थी।

युद्ध के बाद सभा

युद्ध के बाद भी एक सभा होती थी। सभा में जन के राजा जीत में मिली गायों, घोड़ों, रथ, हथियार, सोना, दास-दासियों को जन के कई लोगों के बीच बाँटते थे लेकिन सबसे बड़ा हिस्सा राजा अपने पास रखता था, फिर राजन्यों और ब्राह्मणों को हिस्सा मिलता था। कुछ गायें, भेड़ें, बकरियाँ, अनाज आदि जन के साधारण लोगों को भी दी जाती थीं। इससे राजन्यों के पास गायें, घोड़े, हथियार, सोना, दास-दासियों की संख्या ज्यादा हो जाती थी और वे पहले से ज्यादा ताकतवर बन जाते थे।

वर्ण व्यवस्था-

आरम्भ में आर्य तीन वर्णों में विभाजित थे- राजा, पुरोहित तथा अन्य जन। यह विभाजन उनके व्यवसाय पर आधारित था परन्तु कठोर नहीं था किन्तु धीरे-धीरे जो यज्ञ करवाते थे, वे ब्राह्मण कहलाए। जो युद्ध करते थे, वे क्षत्रिय कहलाए। जो व्यापार करते थे वे वैश्य कहे जाते थे। बाद में शूद्र नामक चौथा वर्ण भी मिलता है जिसमें युद्ध में हारे लोग शामिल किए गए। धीरे-धीरे वर्ण व्यवस्था कठोर हो गयी। अब कार्य रुचि के आधार पर न होकर वंश (पिता के कार्य) के आधार पर हो गए।

राजा को बलि देते हुए

अब खेती का महत्व बढ़ा

पशुपालक आर्य अपनी बढ़ती हुई जरूरतों के लिए सिर्फ युद्ध से प्राप्त सम्पत्ति पर ही हमेशा निर्भर नहीं रह सकते थे। अतः उन्हें अपनी आवश्यकताओं के लिए कृषि पर ध्यान देना पड़ा। अब वे गंगा, यमुना के दोआब क्षेत्र में फैलने लगे। इन्होंने लोहे के औजारों से जंगलों को काटकर कृषि योग्य बनाया। पशुपालक आर्य पहले केवल जौ ही उगाते थे। अब इन नदियों के किनारे वे गेहूँ, धान, दाल व तिलहन भी उगाने लगे। अब उनके लिए खेती प्रमुख हो गई। खेती के साथ-साथ वे पशु भी पालते रहे। धीरे-धीरे वे आत्मनिर्भर होने लगे और अन्य कौशलों के विकास का समय उन्हें मिलने लगा जिससे वे धातुकर्म, बढ़ईगीरी, हस्तशिल्प, चमड़े का काम, आभूषण, मिट्टी के बर्तन आदि बनाने लगे जिससे उनका व्यापार भी बढ़ने लगा।

आश्रम व्यवस्था

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को व्यवस्थित करने के लिए आर्यों ने जीवन को चार अवस्थाओं में बाँट दिया था। पहली अवस्था ब्रह्मचर्य की थी। इसमें बच्चा आश्रम में रहकर शिक्षा पाता था। दूसरी अवस्था गृहस्थ थी।

यह अवस्था पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित थी। तीसरी और चौथी अवस्थाएँ वानप्रस्थ और सन्यास की थीं जिसमें व्यक्ति वन में जाता था और आत्म-चिन्तन द्वारा ईश्वर को प्राप्त करने की कोशिश करता था।

महिलाएँ घर में ही रहकर घरेलू कार्यों, संगीत व नृत्य की शिक्षा प्राप्त करती थीं। यद्यपि महिलाओं की स्थिति पुरुषों के बराबर नहीं थी किन्तु घर में उनको उचित सम्मान एवं आदर प्राप्त था।

युद्ध के बाद सभा

आज महिलाओं को समाज में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं चर्चा कीजिए।

इसे भी जानिए

महाकाव्य रचना- रामायण और महाभारत दो प्रसिद्ध महाकाव्य हैं। रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत में की गयी है। इस ग्रन्थ में कोशल के राजा दशरथ के पुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्श जीवन और कार्यों का वर्णन किया गया है। आज भी रामचन्द्र जी के जीवन पर आधारित रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है।

महाभारत की रचना महर्षि वेदव्यास ने की। इस महाकाव्य में कुरु वंश के कौरवों तथा पांडु वंश के पांडवों की कथा मुख्य रूप से दी गयी है।

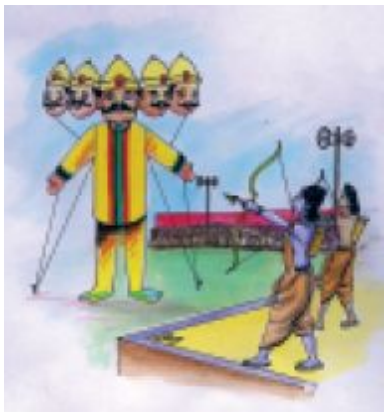

बुराई पर अच्छाई की जीत

और भी जानिए

इस समय से ”लौह युग“ की शुरुआत हो गयी क्योंकि अब अस्त्र-शस्त्र लोहे के बनने लगे थे।

वैदिक कालीन संस्कृति भारतीय संस्कृति का आधार बनी, जिसका प्रभाव समाज, धर्म और कला पर आज भी है।

वैदिक काल से पूर्व चित्रात्मक लिपि थी। अब ध्वनि के आधार पर अक्षरों का विकास होने लगा। अक्षरों को मिलाकर शब्द और शब्दों को मिलाकर वाक्य बनने लगे थे।

राजा-पुरोहित, राजमंत्री, पथ प्रदर्शक, दार्शनिक और योद्धा भी था।

वेतन, सोने-चाँदी, अन्न, वस्त्र या पशुधन के रूप में दिया जाता था।

शब्दावली

अध्न्या - जिसका वध न किया जाए।
दोआब - दो नदियों के बीच का उपजाऊ क्षेत्र
वंशानुगत - पिता के बाद पुत्र को प्राप्त होने वाला अधिकार।

अभ्यास

1. आर्यों के बारे में आप क्या जानते हैं? लिखिए।

2. वैदिक सभ्यता को आर्य सभ्यता क्यों कहते हैं?

3. खेती का विकास हो जाने के बाद आर्यों के जीवन में क्या परिवर्तन हुआ?

4. आर्यों की सामाजिक व्यवस्था कैसी थी?

5. वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था का वर्णन कीजिए?

6. संक्षिप्त उत्तर लिखिए-

(क) आश्रम व्यवस्था (ख) सभा एवं समिति (ग) आर्यावर्त (घ) राजा के कर्तव्य

7. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

(क) प्रसिद्ध गायत्री मंत्र .....वेद में है।

(ख) सप्तस्वर स, रे, ग, म का उल्लेख.....में मिलता है।

(ग) आर्यों की भाषा ..... थी।

(घ) .....की रचना महर्षि वेदव्यास ने की है।

8. निम्नलिखित वाक्यों में सही (झ्) और गलत (′) का निशान लगाइए।

(क) ब्रह्मचर्य आश्रम में बालक शिक्षा ग्रहण करता था। ( )

(ख) लोहे की खोज उत्तर वैदिक काल में हुई। ( )

(ग) अथर्ववेद सबसे प्राचीन वेद है। ( )

(घ) आर्यों की भाषा वैदिक संस्कृत थी। ( )

प्रोजेक्ट वर्क

* आधुनिक समय के विद्यालय तथा वैदिक कालीन विद्यालय (गुरुकुल) में क्या समानताएँ तथाअसमानताएँ हैं। शिक्षक की सहायता से सूची बनाइए।

* निम्नलिखित वस्तुओं से दैनिक उपयोग की क्या-क्या समान बनाए जाते हैं।

वस्तु समान

लोहा

लकड़ी

ताँबा

कच्ची मिट्टी